

**शिलाहरि** पुं. (तत्.) भगवान विष्णु की पाषाण मूर्ति, शालिग्राम।

**शिलिंग** पुं. (अं.) इंग्लैंड की मुद्रा पौंड का बीसवाँ भाग जो 12 पेनी के बराबर होता है।

**शिलिंद** पुं. (तत्.) एक प्रकार की मछली।

**शिलित स्त्री.** (तत्.) 1. पत्थर की भाँति कठोर या जड़ 2. शिथिल।

**शिलीध** पुं. (तत्.) 1. केले का फूल, कदली कुसुम 2. ओला, पत्थर 3. शिलिंद मछली 4. कुरुरमुत्ता।

**शिलीधक** पुं. (तत्.) 1. कुरुरमुत्ता, खुंब 2. साँप की छतरी 3. गोबरछत्ता।

**शिलीपद** पुं. (तत्.) फीलपाँव नामक रोग, पादस्फीति।

**शिलीभूत** पुं. (तत्.) जो जमकर पत्थर की भाँति कठोर हो गया हो।

**शिलीमुख** पुं. (तत्.) 1. भ्रमर, भौरा 2. बाण, तीर वि. मूर्ख, बेवकूफ।

**शिलूष** पुं. (तत्.) 1. एक प्राचीन नाट्यशास्त्री 2. बेल का वृक्ष।

**शिलेष** वि. (तत्.) 1. शिला संबंधी, शिला का, पथरीला पुं. शिलाजीत, शैलेय गंध द्रव्य।

**शिलोच्छ** पुं. (तत्.) 1. फसल कट जाने के बाद खेत में बिखरे दाने बीनने की क्रिया, उच्छवृत्ति 2. अनियमित जीविका, जीवनोपाय विशेष, आकाशवृत्ति।

**शिलोच्चय** पुं. (तत्.) 1. पर्वत, पहाड़ 2. बड़ी चट्टान।

**शिलोत्थ** पुं. (तत्.) शैलेय नामक गंध द्रव्य, शिलाजीत।

**शिलोद्भव** पुं. (तत्.) 1. पाषाण-भेदन, शैलेय, छरीला 2. पीला चंदन।

**शिलौका** पुं. (तत्.) गरुड वि. पर्वत पर होने वाला।

**शिल्प** पुं. (तत्.) हाथ से किया जाने वाला कलात्मक कार्य, कारीगरी, दस्तकारी, हस्तकला, हुनर।

**शिल्पक** पुं. (तत्.) 1. नाट्यशास्त्र के अनुसार अध्यात्म के वर्णन वाला नाटक का एक रूप 2. इंद्रजाल वाला नाटक।

**शिल्पकर्म** पुं. (तत्.) कलात्मक कार्य हाथ से करने का कार्य, कारीगरी, दस्तकारी, शिल्पकारी।

**शिल्पकला स्त्री.** (तत्.) हाथ से कलात्मक कार्य करने का कौशल, दस्तकारी की दक्षता, हस्तकला का हुनर।

**शिल्पकार** पुं. (तत्.) 1. हाथ से कलात्मक काम करने वाला, कारीगर, शिल्पकार 2. भवन बनाने का कार्य करने वाला, राजमिस्त्री।

**शिल्पकारक** पुं. (तत्.) दे. शिल्पकार।

**शिल्पकारी स्त्री.** (तत्.) हाथ से कलात्मक कार्य करना, हस्तकला, शिल्प, दस्तकारी, हुनर, कारीगरी।

**शिल्पक्रिया स्त्री.** (तत्.) दे. शिल्पकर्म।

**शिल्पगृह** पुं. (तत्.) दस्तकारों के काम करने का स्थान, कारखाना।

**शिल्पजीवी** पुं. (तत्.) हस्तकला के काम से अपना भरण-पोषण करने वाला व्यक्ति, दस्तकारी की आय पर गुजारा करने वाला व्यक्ति।

**शिल्पज्ञ** वि. (तत्.) शिल्प विशेष का अच्छा ज्ञाता, हुनर की अच्छी जानकारी रखने वाला, किसी कौशल विशेष का विद्वान।

**शिल्पप्रजापति** पुं. (तत्.) सभी तरह के शिल्पों और कौशलों के परम विद्वान, विश्वकर्मा, देवी-देवताओं के शिल्पकार।

**शिल्प विद्या स्त्री.** (तत्.) शिल्प के व्यवस्थित ज्ञान की विद्या, हुनर की सही सही जानकारी, दस्तकारी के हुनर का अच्छा ज्ञान।

**शिल्पविद्यालय** पुं. (तत्.) विभिन्न शिल्पों का ज्ञान प्रदान करने वाला विद्या का स्थान, दस्तकारियाँ सिखाने वाली संस्था।